

फौजियों का जीवन समझाता 'कितने मोर्चे'

कितने मोर्चे



पुस्तक : कितने मोर्चे
लेखिका : वन्दना यादव
मूल्य : 425 रुपये
प्रकाशक : अनन्य प्रकाशन



पुस्तक समीक्षा

राजेन्द्र मोहन शर्मा

सै

निकों की जिस बहादुरी पर पूरा देश गर्व करता है वह शौर्य जिन वीरगताओं के भरोसे कायम है वे गुमनाम रह जाती हैं और शान्ति काल में जीवनयुद्ध की विभिन्निकाओं को अकेले झेलने के लिए बाध्य हैं। उपन्यास कितने मोर्चे की लेखिका वन्दना यादव की यह अभिव्यक्ति स्वयं उनके अपने अनुभवों की कसौटी से निकले संवेदनशील भावों का प्रवाह है। एक सैनिक की पत्नी का गहरा अनुभव यहाँ झलक रहा है वन्दना यादव की लेखनी से निकलने वाले भाव शब्द और विचार यह बताने के लिए पर्याप्त है कि एक फौजी परिवार को किन किन विषम परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है।

निश्चय ही यह उपन्यास अपने परिवेश को प्रस्तुत करने में पूरी तरह सफल रहा है विनीता ने अपने उपन्यास में जिस गहराई के साथ फौजी अफसर पत्नियों के मनोविज्ञान के साथ-साथ बच्चों के मनोभावों को जिस कुशलता से प्रस्तुत किया है वह सिद्ध करता है कि लेखिका ने अपने कर्म के साथ न्याय किया है।

उपन्यास की जैसी पृष्ठभूमि है उसी से संदर्भित भाषा शैली भी काम में ली गई है। आज निश्चित रूप से सैनिक परिवारों के लिए विशेष रूप से मोर्चे पर तैनात फौजियों के परिवारों को जिन परेशानियों का सामना करना पड़ता है उनकी तरफ और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। उपन्यास की भूमिका सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ नामवर सिंह ने लिखी है। उपन्यास ने जिस तरह के सामाजिक परिवेश को उठाने में सफलता अर्जित की है वह सिद्ध

करता है कि कैसे इन्द्र, अग्रग्रह-दुराग्रह और उपेक्षा सहित अंहकारों के बीच भी रास्ता तलाशा जा सकता है। कुसुम का संघर्ष, परिवारिक जीवन मूल्यों के साथ चीज के लिए जद्दोजहद करना और फिर व्यवस्थित करना यह बताता है कि यह सब एक दिन के अभ्यास का परिणाम नहीं है। कैसे विषम परिस्थितियों में भी उपन्यास की नायिका कैसे संतुलित होकर आगे बढ़ती है यही इस उपन्यास को अन्य रचनाओं के अलग रख देती है। खास बात यह है की उपन्यास में जगह जगह उन तथ्यों को बहुत बारीकी से रेखांकित किया गया है। फौज में घर ठीक ठाक मिल जाए तो समझो जिन्दगी संवर गई। आप जब एक बार शुरू कर देते हैं तो पूरा करके ही रुकेंगे। गजब की कसावट, भाषा का चमत्कार और बेबाकी से विश्लेषण। हाँ वन्दना यादव चाहती तो लम्बे असें तक सीमाओं पर तैनात रहते फौजियों और उनकी पत्नियों के वैवाहिक जीवन में उठने वाले तूफानों पर भी कलम चला सकती थी लेकिन शायद उसके लिए उन्हें कुछ अधिक छूट लेनी पड़ती। अस्तु समग्र रूप से पाठक को यह उपन्यास आनन्द तो देगा ही फौजियों के जीवन को भी समझने का मौका देगा।